जनसंपर्क कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया

01 मई 2023

प्रेस विज्ञप्ति

जामिया में 'रोल ऑफ़ सूफिज्म इन सेल्फ डेवलपमेंट' पर कार्यशाला सह व्याख्यान का आयोजन

जामिया मिल्लिया इस्लामिया के शैक्षिक अध्ययन विभाग (डीईएस) ने ऑफलाइन मोड में 'रोल ऑफ़ सूफिज्म इन सेल्फ डेवलपमेंट' विषय पर एक कार्यशाला सह व्याख्यान का आयोजन किया। यह व्याख्यान विभाग के एम.एड. कार्यक्रम के अंतर्गत स्व-विकास पाठ्यक्रम के क्रम में आयोजित किया गया था।

डॉ. अरशद इकराम अहमद, एचओडी, डीईएस, जेएमआई ने अपने स्वागत भाषण में भारतीय परंपरा में सूफीवाद की प्रासंगिकता के बारे में बात की। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि सूफी संतों की रहस्यवादी स्थिति को गलत समझा गया है और उन्हें खलनायक बना दिया गया है। हालाँकि, धीरे-धीरे लोग खुले दिमाग से सूफियों के सिद्धांतों की ओर बढ़ रहे हैं। इश्क-प्रेम के सिद्धांतों, वेहदत-उल-वजूद और सूफी परंपराओं के कई जीवंत गतिशील सिलसिलों ने इसमें योगदान दिया है। डॉ. अहमद ने कादरिया, चिश्तिया, नक्शबंदिया और अन्य सिलसिलों का उल्लेख किया।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता श्री सुमन मिश्रा, गांव घर फंडेशन के संस्थापक और संपादक, सूफीनामा (रेख्ता) ने अपने सत्र में सूफीवाद के कालक्रम के बारे में बात की और बताया कि यह अब क्या रूप ले चुका है। चर्चा की शुरुआत इश्क के अर्थ पर हुई जिसका सूफीवाद प्रचार करता है और 21वीं सदी में बॉलीवुड गानों और फिल्मों में उनके विचारों को तय करते हुए इसकी व्याख्या कैसे की जाती है।

श्री मिश्रा के कई लेख और किताबें प्रकाशित हैं और उन्होंने सूफी साहित्य और हमारे दैनिक जीवन में सूफी प्रथाओं के महत्व पर व्यापक रूप से चर्चा की है। उन्होंने छात्रों को सूफी साहित्य पर शोध करने के लिए प्रोत्साहित किया जो सूफीनामा की वेबसाइट पर उपलब्ध है और उनके निजी संग्रह में भी उपलब्ध है। राहुल सांकृत्यायन द्वारा कुरान सार, चश्मा-ए-ज्योतिष, शेख इराकी की यात्रा और अन्य महत्वपूर्ण सूफी संतों की पुस्तकों की समृद्ध परंपराओं को एक अलग लेंस से विश्लेषण करने की आवश्यकता है। उन्होंने इस बात पर भी प्रकाश डाला कि कैसे सूफी संत एक-दूसरे से विचारों का आदान-प्रदान करते हैं जो सूफी जीवन शैली के विकास के पूरक हैं।

डॉ असजद अंसारी, आईएएसई द्वारा विशेषज्ञ टिप्पणियां दी गईं जिसमें उन्होंने सूफी परंपराओं और प्रथाओं को अरबी संस्कृति के साथ जोड़ा और संस्कृतियों के बीच अवधारणाओं की यात्रा को एक बार फिर दोहराया गया। डॉ अंसारी ने यह भी कहा कि वर्तमान शिक्षक-छात्र संबंध सूफी प्रथाओं में संबंधों के अनुकूल नहीं हैं, लेकिन ये महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने कई उपाख्यानों का हवाला दिया जहां विनम्रता और प्रेम वे गुण हैं जिन पर सूफीवाद केंद्रित है। ये और कई अन्य गुण शिक्षकों और शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण हैं।

प्रोफेसर मोहम्मद यूसुफ ने खानेकाह से जुड़े चमत्कारों और आत्म-प्राप्ति के बारे में एक किस्सा साझा किया। डॉ. जावेद हुसैन द्वारा समापन टिप्पणी और धन्यवाद ज्ञापन किया गया, जिन्होंने सूफीवाद के वास्तविक विचार को समझने में शिक्षा की भूमिका को बताते हुए दर्शकों को संबोधित किया।

जनसंपर्क कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया